

  
**भारत का राजपत्र**  
**The Gazette of India**

असाधारण  
**EXTRAORDINARY**

भाग II-खण्ड 3-खण्ड (II)  
**PART II—Section 3—Sub-section (II)**

प्राधिकार से प्रकाशित  
**PUBLISHED BY AUTHORITY**

सं० 504]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 30, 1977/अग्राहायना 9, 1899

No. 504]

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 30, 1977/AGRAHAYANA 9, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed  
as a separate compilation

**MINISTRY OF COMMERCE, CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION :**

**ORDER**

*New Delhi, the 30th November 1977*

**S.O. 794(E).**—In exercise of the powers conferred by section 3 of the Essential Commodities Act, 1955 (10 of 1955), the Central Government hereby makes the following Order further to amend the Jute (Licensing and Control) Order, 1961, namely:—

1. (1) This Order may be called the Jute (Licensing and Control) Amendment Order, 1977.

(2) It shall come into force at once

2. In the Jute (Licensing and Control) Order, 1961,—

- (i) in sub-clause (c) clause 2, for the words "in a State"; the word "also" shall be substituted,
- (ii) to sub-clause (1) of clause 3, the following provisos shall be added, namely:—

"Provided that the Jute Commissioner may, by notification in the Official Gazette, exempt any such person or class of such persons from the provisions of this sub clause"

Provided further that in granting such exemption under the preceding proviso the Jute Commissioner shall have regard to the following matters, namely:—

- (i) the volume of business in raw jute or jute textiles carried on by such person or class of such persons;
  - (ii) the quantity of raw jute or jute textiles in the possession of such person or class of such persons;
  - (iii) the period for which the stocks of raw jute or jute textiles are ordinarily held by such person or class of such persons for the purpose of sale or storage,
  - (iv) price situation and availability position of raw jute or jute textiles in the country, and
  - (v) any other relevant factors.
- (iii) for item (b) of sub-clause (2) of clause 9A, the following shall be substituted, namely—
- "(b) the maximum quantity of raw jute which the manufacturer has had in his possession during the period of two years immediately preceding the commencement of the Jute (Licensing and Control) Amendment Order, 1977".

[No. F.8/20/74-Jute]  
B L DAS, Jt. Secy

### आखिरी, नागरिक पूर्ति और सहकारिता मंत्रालय

#### आदेश

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 1977

क्रा० क्र० 794(अ).—केन्द्रीय सरकार, आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 (1955 का 19) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पटसन (अनुज्ञापन और नियंत्रण) आदेश, 1961 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित आदेश करती है, अर्थात् :—

1. (1) इस आदेश का नाम पटसन (अनुज्ञापन और नियंत्रण) संशोधन आदेश, 1977 है।

(2) यह तुरन्त प्रवृत्त होगा।

2. पटसन (अनुज्ञापन और नियंत्रण) आदेश, 1961 में,—

(i) खण्ड 2 के उपखण्ड (ग) में, "किसी राज्य में" शब्दों का खोटा किया जाएगा ;

(ii) खण्ड 3 के उपखण्ड (1) में, निम्नलिखित परन्तुक जोड़े जाएंगे, अर्थात् :—

"परन्तु पटसन आयुक्त, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, इस उपखण्ड के उपबन्धों से ऐसे किसी व्यक्ति या ऐसे व्यक्तियों के वर्ग को छूट दे सकेगा :

परन्तु यह और कि पूर्ववर्ती उपबन्ध के अधीन ऐसी छूट देने में पटसन आयुक्त निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेगा, अर्थात् :—

(i) ऐसे व्यक्ति या ऐसे व्यक्तियों के वर्ग द्वारा चलाए गए कच्चे पटसन या पटसन वस्त्रों में कारबार का परिमाण ;

(ii) ऐसे व्यक्ति या ऐसे व्यक्तियों के वर्ग के कच्चे पटसन या पटसन वस्त्रों की मात्रा ;

- (iii) यह अवधि, जिसके लिए कच्चे पटसन या पटसन वस्तुओं के स्टॉक विक्रय या भण्डारकरण के प्रयोजनार्थ ऐसे व्यक्ति या ऐसे व्यक्तियोंके द्वारा साधारणतः रोके रखे जाते हैं,
  - (iv) देश में कच्चे पटसन या पटसन वस्तुओं की कीमत-स्थिति और उपलब्धता-स्थिति; तथा
  - (v) कोई अन्य सुसंगत कारक”।
- (iii) खण्ड 9क के उपखण्ड (2) की मद (ख) के स्थान पर, निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—
- “(ख) कच्चे पटसन की यह अधिकतम मात्रा, जो पटसन (अनुज्ञापन और नियंत्रण) संशोधन आदेश, 1977 के प्रारम्भ के ठीक पूर्ववर्ती दो वर्षों की अवधि के दौरान विनिर्दिष्ट ने अपने कब्जे में रखी हुई थी”।

[सं० फा० 9/20/74-पटसन]

डी० एल० दास, संयुक्त सचिव :

